Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LV (55), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं जैन दर्शन : एक अध्ययन

विरेन्द्र मुवेल*

* सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) वी.बी.के.एन. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सेंधवा, जिला बडवानी (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध ज्ञान परंपराओं में से एक है। यह केवल धार्मिक अथवा आध्यात्मिक ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि दर्शन, शिक्षा, विज्ञान, चिकित्सा, साहित्य, कला, संस्कृति, नैतिकता तथा पर्यावरण संरक्षण जैसे विविध क्षेत्रों को समाहित करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य मनुष्य के सर्वांगीण विकास, आत्मबोध, नैतिक चेतना एवं लोककल्याण की भावना का विकास करना है। भारतीय ज्ञान परंपरा के निर्माण एवं विकास में वैदिक, बौद्ध और जैन परंपराओं का विशेष योगदान रहा है। इनमें जैन दर्शन ने अहिंसा, अनेकांतवाद, स्याद्वाद, अपरिग्रह, सत्य तथा आत्मसंयम जैसे सिद्धांतों के माध्यम से भारतीय चिंतन को नई दिशा प्रदान की। भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत आज भी वैश्विक शांति, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समरसता, नैतिक नेतृत्व तथा सतत विकास के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक हैं।

प्रस्तुत शोध-पत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा, जैन दर्शन के उद्भव, उसके प्रमुख सिद्धांतों तथा भारतीय ज्ञान परंपरा एवं जैन दर्शन में अंतर्संबंध का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन दर्शाता है कि जैन दर्शन भारतीय ज्ञान प्रणाली का अभिन्न अंग है, जो आज भी मानवता को नैतिक एवं व्यावहारिक जीवन के लिए प्रेरित करता है।

शब्द कुंजी – भारतीय ज्ञान परंपरा, जैन दर्शन, अहिंसा, अनेकांतवाद, स्याद्वाद, अपरिग्रह, भगवान महावीर, भारतीय ज्ञान प्रणाली।

प्रस्तावना – भारत को प्राचीन काल से ही ज्ञान, दर्शन और संस्कृति की भूमि माना जाता है। यहाँ विकसित ज्ञान परंपरा ने मानव जीवन के आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक तथा बौद्धिक विकास को समान महत्व दिया है। भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य केवल सूचना या तकनीकी ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि व्यक्ति के चरित्र, विवेक, आत्मानुशासन तथा समाजोपयोगी व्यक्तित्व का निर्माण करना है। भारतीय ज्ञान परंपरा का आधार वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत, बौद्ध साहित्य तथा जैन साहित्य जैसे प्राचीन ग्रंथ हैं। इन सभी ने भारतीय संस्कृति और दर्शन को समृद्ध बनाया। विशेष रूप से जैन दर्शन ने सत्य, अहिंसा, करुणा, आत्मसंयम तथा सह-अस्तित्व जैसे सिद्धांतों के माध्यम से भारतीय चिंतन को एक नई दिशा दी। जैन दर्शन केवल धार्मिक आस्था नहीं, बल्कि एक वैज्ञानिक एवं नैतिक जीवन-दृष्टि है। यह मनुष्य को आत्मानुशासन, तर्कशीलता तथा उत्तरदायित्वपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देता है। वर्तमान समय में जब विश्व हिंसा, पर्यावरण संकट, उपभोक्तावाद और नैतिक मूल्यों के ह्रास जैसी समस्याओं से जूझ रहा है, तब जैन दर्शन की शिक्षाएँ अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होती हैं।

अध्ययन के उद्देश्य– इस शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य हैं:

1. भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा का अध्ययन करना।
2. जैन दर्शन के उद्भव एवं विकास का परिचय प्रस्तुत करना।
3. जैन दर्शन के प्रमुख सिद्धांतों का विश्लेषण करना।
4. भारतीय ज्ञान परंपरा में जैन दर्शन के योगदान का अध्ययन करना।
5. समकालीन समाज में जैन दर्शन की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

शोध पद्धति – प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। अध्ययन में मुख्यत: द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा– भारतीय ज्ञान परंपरा एक ऐसी समग्र ज्ञान प्रणाली है, जिसका विकास हजारों वर्षों में हुआ है। इसका उद्देश्य व्यक्ति, समाज और प्रकृति के मध्य संतुलित संबंध स्थापित करना है। भारतीय ज्ञान परंपरा केवल शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की एक समग्र पद्धति प्रस्तुत करती है। इसमें आध्यात्मिकता, नैतिकता, विज्ञान, चिकित्सा, योग, आयुर्वेद, गणित, ज्योतिष, व्याकरण, साहित्य, संगीत तथा दर्शन जैसे अनेक विषय सम्मिलित हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल मंत्र है–

'सा विद्या या विमुक्तये'

अर्थात् वही विद्या वास्तविक है जो मनुष्य को अज्ञान, बंधनों एवं दु:ख से मुक्त करे।

भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रमुख विशेषताएँ:

1. समग्र एवं बहुआयामी दृष्टिकोण
2. आत्मज्ञान एवं आत्मविकास पर बल
3. नैतिक एवं चारित्रिक विकास
4. प्रकृति के साथ सामंजस्य
5. सत्य एवं विवेक की खोज
6. सह-अस्तित्व एवं विश्व बंधुत्व
7. मानव कल्याण की भावना

जैन दर्शन का संक्षिप्त परिचय– जैन धर्म भारत के सबसे प्राचीन धार्मिक एवं दार्शनिक संप्रदायों में से एक है। जैन परंपरा के अनुसार 24 तीर्थकरों ने समय-समय पर मानव समाज को सत्य एवं धर्म का मार्ग प्रशस्त किया। प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव (आदिनाथ)तथा अंतिम एवं 24वें तीर्थकर भगवान महावीर स्वामी माने जाते हैं। भगवान महावीर का जन्म लगभग 599 ईसा

पूर्व वैशाली के निकट कुंडग्राम में हुआ। उन्होंने 30 वर्ष की आयु में राजसी जीवन का त्याग कर कठोर तपस्या की और केवलज्ञान प्राप्त करने के बाद मानव समाज को अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह एवं आत्मसंयम का संदेश दिया। महावीर स्वामी ने कर्मकांड, हिंसा, पशुबलि तथा सामाजिक असमानता का विरोध किया तथा समानता, करुणा एवं नैतिक जीवन पर बल दिया।

जैन दर्शन के मूल सिद्धांत – भगवान महावीर ने गृहस्थ को पंच महाव्रत अहिंसा, अस्तेय, सत्य, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य के पालन पर जोर दिया। पंच महाव्रत के साथ-साथ सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र अर्थात् त्रिरत्न पालन की भी शिक्षा दी।

1. **अहिंसा–** मानव जीवन के दो आधार स्तम्भ हैं- आचार और विचार। आचार जीवन का व्यावहारिक पक्ष है और विचार सैद्धान्तिक। आदमी जैसा सोचता है, वैसा करता है और जैसा करता है, वैसा सोचता भी है। आचार और विचार - दोनों एक-दूसरे पर आधारित हैं। जैन दर्शन की आचार मीमांसा अहिंसा पर आधारित है। अहिंसा परमो धर्म: उनका मुख्य घोष है। अहिंसक आचार-विचार में ही मानव का विकास निहित है। यह सिद्धांत मानवाधिकार, सामाजिक सद्भाव, पशु संरक्षण तथा पर्यावरण संरक्षण की आधुनिक अवधारणाओं के अनुरूप है।
2. **सत्य–** सत्य जैन धर्म का मूल नैतिक सिद्धांत है। सत्य का पालन व्यक्ति के चरित्र, विश्वास एवं सामाजिक जीवन को सुदृढ बनाता है।
3. **अस्तेय–** बिना अनुमति किसी वस्तु का ग्रहण न करना ही अस्तेय है। यह सामाजिक न्याय एवं नैतिक आचरण का आधार है।
4. **ब्रह्मचर्य –** ब्रह्मचर्य का व्यापक अर्थ आत्मसंयम एवं इन्द्रिय-निग्रह है। यह मानसिक एवं आध्यात्मिक उन्नति का आधार माना गया है।
5. **अपरिग्रह–** अपरिग्रह का अर्थ है आवश्यकता से अधिक संग्रह न करना। यह सिद्धांत उपभोक्तावाद, संसाधनों के अंधाधुंध दोहन तथा पर्यावरणीय असंतुलन को रोकने में सहायक है।

जैन धर्म में मोक्ष प्राप्ति के लिए विभिन्न उपाय दृष्टिगत हैं, जिसे ष्त्रिरत्नष के रूप में जाना जाता है जो इस प्रकार हैं:-

1. **सम्यक दर्शन–** सम्यक दर्शन का आशय सत्य में पूरी दृढता के साथ विश्वास एवं श्रद्धा रखने से है। जैन दर्शन में सबसे महत्वपूर्ण कदम मोक्ष मार्ग है। सम्यक दर्शन का अभिप्राय व्यक्ति को आत्मा एवं उसके गुणों में विश्वास से है, इसके अभाव में मोक्ष प्राप्त करना संभव नहीं है।
2. **सम्यक ज्ञान–** सम्यक ज्ञान का आशय आत्मा, कर्म एवं मोक्ष के बारे में सही और तथ्यपरक ज्ञान से है। सम्यक ज्ञान प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को अनवरत ध्यान एवम् अध्ययन करते रहना चाहिए।
3. **सम्यक चरित्र –** सम्यक चरित्र के अंतर्गत अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अचौर्य ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह का पालन करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि सही आचरण के अभाव में सम्यक दर्शन एवं सम्यक ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो पाती है।

अनेकांतवाद – अनेकांतवाद जैन दर्शन की सबसे महत्वपूर्ण देन है। इसका अर्थ है कि प्रत्येक वस्तु, विचार या सत्य के अनेक पक्ष होते हैं। किसी भी विषय को केवल एक दृष्टिकोण से समझना पूर्ण सत्य नहीं हो सकता। अनेकान्तिक दृष्टिकोण वाला व्यक्ति हर कथन में सत्य खोजने का प्रयास करता है। अनेकान्त विवादास्पद प्रसंगों में सामंजस्य तथा समन्वय की मनोवृत्ति का विकास करता है। अनेकान्त का पहला सिद्धान्त है- सापेक्षता। यह एक वैज्ञानिक एवं सार्वभौम सिद्धान्त है। यह दर्शन-युग से वैज्ञानिक युग में भी प्रवेश पा चुका है। विश्व-विख्यात वैज्ञानिक आल्बर्ट आइंस्टीन द्वारा आविष्कृत 'सापेक्षवाद' (Theory of Relativity) विज्ञान का एक प्रमुख सिद्धान्त बन चुका है। आज के बहुसांस्कृतिक एवं वैश्विक समाज में अनेकांतवाद सामाजिक समरसता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की आधारशिला बन सकता है।

स्याद्वाद – स्याद्वाद अनेकांतवाद का व्यवहारिक रूप है। इसके अनुसार प्रत्येक कथन परिस्थितियों, समय, स्थान एवं दृष्टिकोण के अनुसार सत्य हो सकता है। स्याद्वाद व्यक्ति को बिना पर्याप्त विचार के निर्णय लेने से रोकता है तथा विवेकपूर्ण, संतुलित एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा देता है। आधुनिक अनुसंधान, न्यायशास्त्र, सामाजिक विज्ञान एवं वैज्ञानिक पद्धति में भी यह सिद्धांत अत्यंत उपयोगी माना जाता है।

कर्म सिद्धांत– जैन दर्शन के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों का स्वयं उत्तरदायी है। जैन धर्म ने जन्म आधारित श्रेष्ठता का विरोध किया तथा प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों के आधार पर सम्मान देने की शिक्षा दी। अच्छे कर्म शुभ परिणाम तथा बुरे कर्म अशुभ परिणाम उत्पन्न करते हैं। यह सिद्धांत व्यक्ति में उत्तरदायित्व की भावना, नैतिक जीवन, आत्मानुशासन, ईमानदारी, आत्मविश्वास का विकास करता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में जैन दर्शन का दार्शनिक योगदान एवम् वर्तमान में प्रासंगिकता – भारतीय दर्शन की विभिन्न धाराओं में जैन दर्शन का विशिष्ट स्थान है। जैन दर्शन ने मानव जीवन, आत्मा, कर्म, मोक्ष तथा नैतिक आचरण की ऐसी वैज्ञानिक एवं तर्कसंगत व्याख्या प्रस्तुत की, जिसने भारतीय ज्ञान परंपरा को समृद्ध बनाया। यह दर्शन केवल आध्यात्मिक चिंतन तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यवहारिक जीवन के लिए भी स्पष्ट मार्गदर्शन प्रदान करता है:

1. **पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास–** जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन के कारण पर्यावरण संकट गहरा रहा है। जैन दर्शन का अपरिग्रह एवं जीव-दया का सिद्धांत संसाधनों के संतुलित उपयोग और प्रकृति के संरक्षण का संदेश देता है। सतत विकास (Sustainable Development) के लिए आवश्यक है कि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं तक सीमित उपभोग करे और प्रकृति के साथ संतुलित संबंध बनाए रखे। यह दृष्टिकोण जैन दर्शन में स्पष्ट रूप से प्रतिपादित है।
2. **मानसिक स्वास्थ्य एवं आत्मविकास–** आधुनिक जीवनशैली के कारण तनाव, चिंता एवं अवसाद जैसी समस्याएँ बढ रही हैं। जैन दर्शन आत्मचिंतन, ध्यान, संयम एवं सकारात्मक जीवन-दृष्टि के माध्यम से मानसिक शांति और आत्मविकास का मार्ग प्रस्तुत करता है।
3. **नैतिक नेतृत्व–** आज प्रशासन, व्यापार, राजनीति एवं शिक्षा के क्षेत्र में नैतिक नेतृत्व की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। जैन दर्शन सत्यनिष्ठा, उत्तरदायित्व, आत्मसंयम तथा सेवा-भाव पर बल देता है। ये गुण एक आदर्श नेतृत्व के लिए आवश्यक हैं।
4. **विश्व शांति एवं अहिंसा–** जैन दर्शन का मूल आधार अहिंसा है। भगवान महावीर ने मन, वचन और कर्म से किसी भी जीव को कष्ट न पहुँचाने का संदेश दिया। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में अहिंसा केवल एक धार्मिक आदर्श नहीं, बल्कि शांति, मानवाधिकार तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग की आधारशिला है। यदि व्यक्ति और राष्ट्र अहिंसा के सिद्धांत को अपनाएँ, तो संघर्ष एवं हिंसा स्वतरू ही काम हो जाएगी
5. **मूल्य आधारित शिक्षा–** राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भारतीय ज्ञान

प्रणाली (IKS) को शिक्षा में सम्मिलित करने पर बल देती है। जैन दर्शन के सिद्धांतकृसत्य, अहिंसा, आत्मसंयम, अनुशासन एवं सहिष्णुता विद्यार्थियों के नैतिक एवं चारित्रिक विकास में अत्यंत सहायक हो सकते हैं।

सुझाव:

1. भारतीय ज्ञान परंपरा एवं जैन दर्शन को विद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर के पाठ्यक्रमों में व्यापक रूप से सम्मिलित किया जाए।
2. मूल्य आधारित शिक्षा के अंतर्गत अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह एवं अनेकांतवाद जैसे सिद्धांतों का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाए।
3. जैन साहित्य एवं प्राचीन ग्रंथों का डिजिटलीकरण तथा विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किया जाए।
4. भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) पर अंतर्विषयक शोध को प्रोत्साहित किया जाए।
5. पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास की नीतियों में जैन दर्शन के सिद्धांतों का समावेश किया जाए।
6. युवाओं में आत्मसंयम, नैतिकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व विकसित करने हेतु जागरूकता कार्यक्रम संचालित किए जाएँ।
7. विश्वविद्यालयों में भारतीय ज्ञान परंपरा एवं जैन दर्शन पर विशेष शोध केंद्र स्थापित किए जाएँ।

निष्कर्ष– भारतीय ज्ञान परंपरा केवल प्राचीन ज्ञान का संग्रह नहीं, बल्कि मानव जीवन को नैतिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक दृष्टि से समृद्ध बनाने वाली एक समग्र जीवन–पद्धति है। इस परंपरा के विकास में जैन दर्शन का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। वर्तमान समय में जब विश्व हिंसा, असहिष्णुता, उपभोक्तावाद, नव उपनिवेशवाद एवं पर्यावरणीय संकट जैसी समस्याओं से जूझ रहा है, तब जैन दर्शन का संतुलित एवं मानवीय दृष्टिकोण एक प्रभावी समाधान प्रस्तुत करता है। इसलिए भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन में जैन दर्शन का समुचित स्थान सुनिश्चित किया जाना चाहिए तथा इसकी शिक्षाओं को समकालीन शिक्षा, नीति निर्माण एवं सामाजिक जीवन में अधिकाधिक अपनाया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. जैन अक्षय कुमार (2024) 'भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध संदर्भ: जैन आगम में धारणीय विकास' SHODH SAMAGAM ISSN: 2581&6918 (Online), 2582&1792(PRINT) p-405&412. issue 2, Vol. 7
2. हुरुई (2020) 'जैन धर्म का समग्र विभाजन और उसका प्रभाव' Chetana International Educational Journal ISSN-2231-3613, p- 33-38. Issue 5,Vol.1
3. जैन हीरालाल (1975) 'भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान' मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद्, भोपाल।
4. Jain, P(2014) Dharma and Ecology of Hindu Communities: Sustenance and Sustainability. ISBN 978-1-4094-0591-7
5. https://www-drishtiias-com/hindi/to&the&points/paper1/jainism&1

****